नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत सत्र 2023-24 से पाठ्यपुस्तकों को पुनर्संयोजित किया गया है। यह संजीव पास बुक्स पूर्णतः नवीन पुनर्संयोजित पाठ्यपुस्तक एवं परिवर्तित पाठ्यक्रम पर आधारित है।

पास बुक्स में नं. 1

संजीव®

पास बुक्स

संस्कृत-XI

(कक्षा 11 के विद्यार्थियों के लिए)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा बोर्ड की website पर जून, 2023 में जारी पूर्णतः नवीन परिवर्तित पाठ्यक्रमानुसार

- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित
- प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के लिए पूर्ण सामग्री

संजीव प्रकाशन,
जयपुर

मूल्य : ₹ 340/-

- प्रकाशक :

  संजीव प्रकाशन

  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,

  जयपुर-3

  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  website : www.sanjivprakashan.com

- © प्रकाशकाधीन

- लेजर कम्पोजिंग :

  संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

- मुद्रक :

  पंजाबी प्रेस, जयपुर

  ****

❖ इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं–

email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
पता : प्रकाशन विभाग संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर

आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।

❖ इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।

❖ सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा बोर्ड की website पर जून, 2023 में जारी नवीन परिवर्तित पाठ्यक्रम

संस्कृत साहित्य–कक्षा–11

परीक्षा	समय (घंटे)	प्रश्न-पत्र के लिए अंक	पूर्णांक
सैद्धान्तिक	3.15 होराः	100	100

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र	अंकभार
1.	पठितावबोधनम्	40
2.	संस्कृत साहित्यस्य इतिहास	10
3.	अपठितावबोधनम्	08
4.	रचनात्मक कार्यम्	12
5.	अनुप्रयुक्त व्याकरणम्	30
	कुल	100

1. विषय वस्तु–पठितावबोधनम्	**40**
1. पाठ्यपुस्तकात् बहुविकल्पात्मकप्रश्नाः (सप्त)	1×7=7
2. पाठ्यपुस्तकात् अंशत्रयम् (एकः गद्यांशः, एकः पद्यांशः, एकः नाट्यांशः)	6+6+6=18
प्रति अंशे प्रश्नाः–	
(क) एकपदेन उत्तरम् (प्रश्नद्वयम्) 1/2×2=1	
(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरम् (प्रश्नद्वयम्) 1×2=2	
(ग) भाषिककार्यम्– (प्रश्नत्रयम्) 1×3=3	
कर्तृक्रियापदचयनम्, विशेषणविशेष्यचयनम्, संज्ञा-सर्वनामप्रयोगः, पर्याय-विलोमपदचयनम्।	
3. पाठ्यपुस्तकात् एकस्य पद्यस्य अन्वयलेखनम्	3
4. पाठ्यपुस्तकात् एकस्य सूक्तवचनस्य पद्यांशस्य वा हिन्द्यां भावार्थलेखनम्	2
5. पाठ्यपुस्तकात् एकस्य गद्यपाठस्य हिन्दीभाषायां सारलेखनम्	3
6. पाठ्यपुस्तकात् शब्दार्थलेखनम् (षष्टशब्दानाम्)	1/2×6–3
7. रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणम् (चत्वारः)	1×4=4

2. संस्कृत साहित्यस्य इतिहास **(प्रश्नाः-बहुचयनात्मकाः, रिक्तस्थानपूर्तिः, अतिलघूत्तरात्मकाः च)**	**10**
(i) संस्कृतसाहित्यस्य प्रमुख लेखकानाम् तेषां काव्यानां च संक्षिप्त परिचयः— कालिदासः, श्रीहर्षः, भारविः, माघः, शूद्रकः, भवभूतिः।	6
(ii) नाट्य विषयक शब्दावली-परिचयः नान्दी, नेपथ्यम् प्रस्तावना, आत्मगतम् प्रकाशम्, जनान्तिकम्, भरतवाक्यम्।	2
(iii) संस्कृतसाहित्यस्य प्रमुखकाव्यानां परिचयः—रामायणम्, महाभारतम्।	2

3. अपठितावबोधनम्	**08**
80-100 शब्द परिमितः एकः सरलः अपठित गद्यांशः। संस्कृतसाहित्यपरिचायकं विषयवस्तु स्यात्। प्रश्न वैविध्यम् :	
(क) एकपदेन उत्तरम् (प्रश्नद्वयम्)	1×2=2
(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरम् (प्रश्नत्रयम्)	1×3=3
(ग) भाषिककार्यम्-(चत्वार) विशेषण-विशेष्य/पर्याय/विलोमादिचयनम्, सर्वनाम स्थान सञ्ज्ञा प्रयोगः/कर्तृक्रियापदचयनम्	1/2×4-2
(घ) समुचितशीर्षकप्रदानम्	1

4. रचनात्मककार्यम्	**12**
संस्कृतेन रचनात्मककार्यम् (i) प्रदत्त संकेताधारितम् औपचारिकम् अनौपचारिकम् वा पत्रम्/प्रार्थनापत्रम् (ii) संकेताधारितम् अनुच्छेद लेखनम् (iii) अनुवादकार्यम् (चतुर्णाम्)	 4 4 4

5. अनुप्रयुक्त व्याकरणम् (**प्रश्नाः**—बहुचयनात्मकाः, रिक्तस्थानपूर्तिः, अतिलघूत्तरात्मकाः, लघूत्तरात्मकाः च)	**30**
(1) वर्णानाम् उच्चारणस्थानम्, प्रयत्नानि	3
(2) **सन्धिः** सन्धिकरणम्, सन्धिविच्छेदः	3
(i) स्वर सन्धिः—दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण, अयादि, पूर्वरूपम्, पररूपम्।	
(ii) व्यंजन सन्धिः—श्चुत्वम्, ष्टुत्वम्, णत्वविधानम्, षत्वविधानम्, मोऽनुस्वारः पर सवर्णः।	

(iii) विसर्ग सन्धिः—सत्वम्, उत्वम्, रुत्वम्, लोपः।	
(3) शब्द-रूपाणि— रामः, हरि, सखि, रमा, पितृ, गुरुः, मातृ, नदी, अस्मद्, युष्मद्, तत्, इदम्, राजन्, भवत्, विद्वस्, अदस्, तादृश्, दिश्, सरित्।	4
(4) धातु-रूपाणि— (i) परस्मैपदिनः—भू (भव्), पठ्, हस्, वच्, लिख्, अस्, पा, कृ, हन्, नृत्, आप्, शक्, ज्ञा, चिन्त्। (ii) आत्मनेपदिनः—सेव्, लभ्, रुच्, मुद्, याच्, ऐध्। (iii) उभयपदिनः—भज्, पच्, नी, हृ।	4
(5) अधोलिखित प्रत्यययुक्तानि पदानि अधिकृत्यप्रश्नाः— (i) कृदन्तानि—क्तः, क्तवतु, क्त्वा, तुमुन्, यत्, तव्यत्, अनीयर्, क्तिन्, शतृ, शानच्, तृच्, ण्वुल्, णिनि, अच्। (ii) तद्धितानि—मयट्, तरप्, तमप्, ठक्, इनि, अण्। (iii) स्त्री प्रत्ययाः—टाप्, ङीप्।	4
(6) अव्यय प्रयोगाः— पुनः, उच्चैः, नीचैः, शनैः, अधः, अद्य, श्व, ह्यः, प्रायः, नूनम्, भूयः, खलु, किल, धिक्, युगपत्, सायम्, चिरम्, ईषत्, तूष्णीम्, सहसा, मिथ्या, पुरा, पठितांशेषु प्रयुक्तानि अन्यानि पदानि च।	4
(7) विभक्ति प्रयोगाः—उपपदविभक्तयः (द्वितीयातः सप्तमीपर्यन्तम्)	4
(8) सरलसमस्तपदानां विग्रहाः समासश्च-द्विगुः, द्वन्द्वः, तत्पुरुषः, कर्मधारयः, बहुव्रीहिः, अव्ययीभावः	4

पुस्तक का नाम : शाश्वती प्रथमो भागः

नोट– विद्यार्थी उपर्युक्त पाठ्यक्रम को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध अधिकृत पाठ्यक्रम से मिलान अवश्य कर लें। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध पाठ्यक्रम ही मान्य होगा।

विषय-सूची

शाश्वती (प्रथमो भागः)

प्रथमः पाठः	वेदामृतम्	1-9
द्वितीयः पाठः	परोपकाराय सतां विभूतयः	9-22
तृतीयः पाठः	मानो हि महतां धनम्	22-34
चतुर्थः पाठः	सौवर्णशकटिका	34-43
पञ्चमः पाठः	आहारविचारः	43-52
षष्ठः पाठः	सन्ततिप्रबोधनम्	52-63
सप्तमः पाठः	विज्ञाननौका	64-71
अष्टमः पाठः	कन्थामाणिक्यम्	72-91
नवमः पाठः	ईशः कुत्रास्ति	91-99
दशमः पाठः	सत्त्वमाहो रजस्तमः	99-116
एकादशः पाठः	नवद्रव्याणि	116-124

संस्कृतसाहित्यस्य इतिहासः

(i) संस्कृतसाहित्यस्य प्रमुखलेखकानां तेषां काव्यानां च संक्षिप्त-परिचयः	125-149
(ii) नाट्यविषयक शब्दावली-परिचयः	149-153
(iii) संस्कृतसाहित्यस्य प्रमुखकाव्यानां परिचयः	153-162
अपठितांशावबोधनम्	**163-180**
रचनात्मककार्यम्	**181-241**
(i) संकेताधारितं औपचारिकम् अनौपचारिकं पत्रम्/प्रार्थनापत्रम्-लेखनम्	181-213
(ii) संकेताधारितं अनुच्छेदलेखनम्	213-224
(iii) अनुवाद-कार्यम् (चतुर्णाम्)	224-241

अनुप्रयुक्त-व्याकरणम्–

1. वर्णानाम् उच्चारणस्थान-प्रयत्नानि	242-250
2. सन्धिः (सन्धिकरणम् सन्धिच्छेदः च)	250-273
3. शब्द-रूप	273-283
4. धातु-रूप (वाक्येषु क्रियाप्रयोगः)	283-309
5. प्रत्यय-ज्ञानम्	309-334
6. अव्यय प्रयोगाः	334-344
7. विभक्ति-प्रयोगाः	345-361
8. समास-ज्ञानम्	361-373

❑❑❑

ये हम नहीं कहते,

जमाना कहता है

संजीव पास बुक्स है नं. 1

दैनिक भास्कर

जयपुर, 12 जुलाई, 2022

राजस्थान का प्रमुख दैनिक

सफलता का पर्याय बनीं संजीव पास बुक्स

जयपुर। लंबे समय से संजीव पास बुक्स अपनी उच्च गुणवत्तायुक्त पाठ्यसामग्री, नवीनतम घटनाक्रम, प्रमाणित आँकड़ों तथा सरल भाषा के कारण विद्यार्थियो में सर्वाधिक लोकप्रिय बनी हुई है। लाखों विद्यार्थी संजीव पास बुक्स से अध्ययन कर सफलता अर्जित कर रहे हैं। स्कूल स्तर के विद्यार्थियों के लिए कक्षा 3 से 9 के लिए संजीव आल इन वन, कक्षा 9 से 12 के लिए अलग-अलग विषय पर संजीव पास बुक्स अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के लिए कक्षा 5 से 8 के लिए संजीव रिफ्रेशर आल इन वन, कक्षा 9 से 12 के लिए अलग-अलग विषय पर संजीव रिफ्रेशर प्रकाशित की जाती हैं। कॉलेज स्तर पर भी राजस्थान के सभी प्रमुख विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमानुसार प्रथम वर्ष से एम.ए. तक के लिए संजीव पास बुक्स प्रकाशित की जाती हैं। संजीव प्रकाशन के निदेशक प्रदीप मित्तल एवं मनोज मित्तल के अनुसार संजीव पास बुक्स सहित अन्य सभी पुस्तकें पूर्णत: नवीनतम पाठ्यपुस्तकों एवं नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार तैयार कराई जाती हैं।

राजस्थान पत्रिका

जयपुर, 7 जुलाई, 2022

राजस्थान का प्रमुख दैनिक

विद्यार्थियों के लिए उपयोगी बनी संजीव पास बुक्स

जयपुर। संजीव पास बुक्स अपनी पाठ्यसामग्री, नवीनतम घटनाक्रम और सरल भाषा के चलते विद्यार्थियों के लिए उपयोगी साबित हो रही है। संजीव प्रकाशन के निदेशक प्रदीप मित्तल एवं मनोज मित्तल का कहना है कि हमारी पुस्तकें नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार तैयार कराई जाती है, जिसमें अनुभवी विशेषज्ञों का योगदान होता है। साथ ही समय-समय पर इन्हें अपडेट भी किया जाता है, इससे सहायक पुस्तकों के रूप में विद्यार्थियों के लिए ये बहुत उपयोगी हो जाती है। गौरतलब है कि संजीव पासबुक्स, संजीव इंग्लिश कोर्स, संजीव साइंस पुस्तकें, रिफ्रेशर आदि पुस्तकों की कक्षा 3 से एम.ए. तक के छात्रों के बीच अच्छी डिमांड है।

संजीव पास बुक्स कक्षा 3 से एम. ए. के लिए

प्रकाशक–संजीव प्रकाशन, जयपुर-3

संस्कृत-साहित्य कक्षा-11

शाश्वती

(प्रथमो भागः)

प्रथमः पाठः—वेदामृतम्

(वेद रूपी अमृत)

पाठ-परिचय—भारतीय वैदिक वाङ्मय सम्पूर्ण विश्व का प्राचीनतम वाङ्मय होने के साथ मनुष्य की अंतश्चेतना से फूटी उदात्त कविता का भी प्रथम निदर्शन है। वैदिक काव्य में विश्वशान्ति, विश्वबन्धुत्व, लोकतान्त्रिक मूल्य, निर्भयता तथा राष्ट्रप्रेम का सन्देश भरा पड़ा है जो आज के वातावरण में पहले से भी अधिक प्रासंगिक प्रतीत होता है।

प्रस्तुत पाठ में वैदिक काव्य का अमृततत्व ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद से संकलित किया गया है। इन कविताओं में अत्यन्त उदात्त एवं अनुकरणीय आदर्श विद्यमान है।

अन्वय, कठिन शब्दार्थ, सप्रसङ्ग हिन्दी-अनुवाद/भावार्थ एवं पठितावबोधनम्—

(1)

सङ्गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनासि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते॥ 1॥

अन्वयः—(यूयं) सम् गच्छध्वम्, सम् वदध्वम्, वः मनांसि सम् जानताम्। यथा पूर्वे देवाः सञ्जानानाः भागम् उपासते॥ 1॥

कठिन-शब्दार्थ—सङ्गच्छध्वम् = साथ चलें। **संवदध्वम्** = समान स्वर से एक साथ बोलें। **वः** = तुम्हारे। मनांसि = मन। **संजानताम्** = समान रूप से अर्थ को समझें। **पूर्वे देवाः** = प्राचीन काल में देवगण। **सञ्जानाना** = एकमत होकर। **भागम्** = अपने-अपने हवि के भाग को। **उपासते** = स्वीकार करते हैं, ग्रहण करते हैं।

प्रसंग—प्रस्तुत मंत्र हमारी पाठ्यपुस्तक 'शाश्वती' के 'वेदामृतम्' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। मूलतः यह मंत्र ऋग्वेद के दसवें मण्डल के संज्ञान सूक्त का दूसरा मंत्र है। इसमें ऋषि संवनन ने देवताओं को दृष्टान्त रूप में प्रस्तुत करके सभी सांसारिक प्राणियों को एकमत होने का आह्वान किया है—

हिन्दी अनुवाद/भावार्थ—हे स्तोताओ ! जैसे प्राचीन काल में देवता लोग एकमत होते हुये अपने-अपने हवि के भाग को ग्रहण करते रहे हैं। (वैसे ही) तुम सब साथ-साथ मिलकर चलो, साथ-साथ मिलकर बोलो अर्थात् तुम सब लोगों की वाणी एक जैसी हो, कथनों में परस्पर विरोध न हो। तुम्हारे मन समान रूप से वस्तुस्थिति को समझें।

पठितावबोधनम्—

निर्देशः—उपर्युक्तपद्यांशं पठित्वा एतदाधारितप्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देशं लिखत—

प्रश्नाः— (क) एकपदेन उत्तरत—

(i) कथं वदध्वम्? (ii) कथं गच्छध्वम्?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत—

(i) वः मनांसि कथं जानताम्? (ii) पूर्वे देवाः कथं भागम् उपासते?

(ग) भाषिककार्यम्—

(i) ''सं वो मनांसि जानताम्?'' अत्र क्रियापदं किम्?

(ii) 'युष्माकम्' इत्यर्थे अत्र सर्वनामपदं किम्?

(iii) 'हृदयानि' इति पदस्य श्लोकात् पर्यायपदं चित्वा लिखत।

उत्तराणि— (क) (i) सम्/समानम्। (ii) सम् (संगताः)।

(ख) (i) वः मनांसि सम् (समानम्) जानताम्।

(ii) पूर्वे देवाः सञ्जानाना भागम् उपासते।

(ग) (i) जानताम्। (ii) वः। (iii) मनांसि।

व्याकरणात्मक टिप्पणी–(i) प्रस्तुत मंत्रे ऋषिणा प्रदत्तं उपदेशः सार्वदेशिकं सार्वकालिकं चास्ति।

(ii) अस्मिन् मंत्रे **अनुष्टुप्** छन्द वर्तते।

(iii) **वो मनांस**–वः + मनांसि (विसर्ग, उत्व)। **सञ्जानानाः**–सम् + जानाना (अनुनासिक) सम् + ज्ञा धातु + शानच् प्रत्यय, प्र. पु., एकवचन)।

(2)

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥ 2॥

अन्वयः–वः आकूतिः समानी, वः हृदयानि समाना, वः मनः समानमस्तु। यथा वः सुसह असति॥ 2॥

कठिन-शब्दार्थ–वः = तुम्हारा। **आकूतिः** = संकल्प या वचन। **समानमस्तु** = समान हो। **सुसह** = शोभन सहभाव या संगति। **असति** = हो सके।

प्रसंग–'वेदामृतम्' पाठ से उद्धृत यह मंत्र ऋग्वेद के संज्ञान सूक्त का अन्तिम मंत्र है। इस मंत्र में ऋषि ने स्तोताओं को समान रूप से विचार करने तथा अपने भावों को अभिव्यक्त करने का उपदेश दिया है। वह अपने सदुपदेश द्वारा सबको सुसंगठित करना चाहता है—

हिन्दी-अनुवाद/भावार्थ–आप सबका संकल्प एक जैसा हो, आपके हृदय समान हों। आप लोगों के मन समान हों जिससे आपका संगठन अच्छा हो सके, मजबूत हो सके।

विशेष–भावात्मक एकता की दृष्टि से इस श्लोक का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

पठितावबोधनम्–

प्रश्नाः– (क) एकपदेन उत्तरत–
(i) वः आकूतिः कीदृशी स्यात्? (ii) केषां सुसह असति?
(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत–
(i) युष्माकं हृदयानि कीदृशानि सन्तु? (ii) वः मनः कीदृशम् अस्तु?
(ग) भाषिककार्यम्–
(i) 'मनः' इति कर्तृपदस्य पद्यांशे क्रियापदं किम्?
(ii) 'वः' इति सर्वनामपदस्थाने संज्ञापदं लिखत।
(iii) 'सङ्कल्पः' इत्यस्य पद्यांशे पर्यायपदं किम्?

उत्तराणि– (क) (i) समानी। (ii) वः (युष्माकम्)।
(ख) (i) युष्माकं हृदयानि समानाः सन्तु। (ii) वः मनः समानम् अस्तु।
(ग) (i) अस्तु। (ii) मानवानाम्। (iii) आकूतिः।

व्याकरणात्मक टिप्पणी–

(i) **आकूतिः**–आ + कू + क्तिन् स्त्रीलिङ्ग प्रथमा एकवचनम्। **वः**–युष्मद् शब्दस्य 'युष्माकम्' स्थाने प्रयुक्तः।

(ii) **असति**–अस् धातु लोट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन। सायण ने इसे लट् लकार का वैदिक रूप माना है।

(3)

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥ 3॥

अन्वयः–ऋतायते वाताः मधु (सन्तु), सिन्धवः मधु क्षरन्ति। नः ओषधीः माध्वीः सन्तु॥ 3॥

कठिन-शब्दार्थ–ऋतायते = अपने लिए यज्ञ की कामना करने वाले यजमान के लिए। **वाताः** = वायु। **मधुः** = माधुर्ययुक्त। **सिन्धवः** = समुद्र अथवा नदियाँ। **क्षरन्ति** = बहायें। **माध्वीः** = मधुरता से भरी हुई। **नः** = हमारी। **ओषधीः** = औषधियाँ।

प्रसंग–प्रस्तुत मंत्र हमारी पाठ्यपुस्तक 'शाश्वती' के 'वेदामृतम्' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। मूलतः यह मंत्र ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 90वें सूक्त से लिया गया है। इस मंत्र में मन्त्रद्रष्टा ऋषि ने भगवान् से इस संसार में सर्वत्र माधुर्य भर देने हेतु प्रार्थना की है—

हिन्दी अनुवाद/भावार्थ–अपने लिए यज्ञ की कामना करने वाले यजमान के लिए सभी हवायें मधुरता से युक्त हो जाएँ। सभी नदियाँ अथवा समुद्र मधु (मीठे) जल को प्रवाहित करें। हमारी सभी औषधियाँ मधुरता से युक्त हो जाएँ।

विशेष–प्रस्तुत मन्त्र के द्वारा ऋषि ने प्रकृति के सभी तत्त्वों के मानव-कल्याण करने की कामना की है।

पठितावबोधनम्–

प्रश्नाः– (क) एकपदेन उत्तरत–

(i) कीदृशी वायुः समन्ततः आयातु? (ii) सिन्धवः किं क्षरन्ति?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) काः ऋतायते? (ii) ओषधीः नः कीदृश्य सन्तु?

(ग) भाषिककार्यम्–

(i) 'क्षरन्ति' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

(ii) 'मधुवाताः' इत्यत्र विशेषणपदं किम्?

(iii) 'माधुर्योपेताः' इत्यर्थे पद्यांशे किं पदम्?

उत्तराणि– **(क)** (i) माधुर्यमयी। (ii) मधु।

(ख) (i) मधुवाताः ऋतायते। (ii) ओषधीः नः माध्वीः सन्तु।

(ग) (i) सिन्धवः। (ii) मधु। (iii) माध्वीः।

व्याकरणात्मक टिप्पणी–(i) **माध्वीर्न**–माध्वीः + न (विसर्ग, रुत्व)। माध्वीः = मधु + अण् + डीप् (ब.व.)। **सन्त्वोषधीः**–सन्तु + ओषधीः (यण् सन्धि)।

(ii) अस्मिन् मन्त्रे **गायत्री** छन्द वर्तते।

(4)

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैदि।
दूरङ्गमञ्ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥ 4 ॥

अन्वयः–जाग्रतः यत् (मनः) दूरम् उदैति। तथा एव सुप्तस्य तदु दैवम् (मनः) इति। (यत्) ज्योतिषाम् दूरम् गमम् एकं ज्योतिः। मे तत् मनः शिवसंकल्पम् अस्तु॥ 4॥

कठिन शब्दार्थ–**जाग्रतः** = जागते हुए का। **दूरम् उदैति** = दूर भाग जाता है। **सुप्तस्य** = सोये हुए का। **दैवम्** = दिव्य विज्ञान युक्त। **ज्योतिषाम्** = विषयों का प्रकाशन करने वाली इन्द्रियों में। **दूरं गमम्** = सर्वाधिक दूर तक पहुँचने वाली। **शिव-संकल्पम्** = मंगलमय, कल्याणकारी विचार वाला।

प्रसंग–प्रस्तुत मंत्र हमारी पाठ्यपुस्तक 'शाश्वती' के 'वेदामृतम्' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। मूल रूप से यह मंत्र यजुर्वेद के चौंतीसवें अध्याय से संकलित किया गया है। इसमें मन्त्रद्रष्टा ऋषि ने ईश्वर से प्रार्थना की है कि मन शुभ व कल्याणकारी विचारों वाला बने–

हिन्दी अनुवाद/भावार्थ–जागते हुए प्राणी का जो मन दूर भाग जाता है, वैसे ही सोये हुए प्राणी की भी वही दशा होती है। परन्तु वही दिव्य विज्ञान युक्त मन जो विषयों का प्रकाशन करने वाली इन्द्रियों में सर्वाधिक दूरी तक पहुँचाने वाला एकमात्र प्रकाशक है, मेरा वह मन कल्याणकारी, शुभ विचार वाला बने।

विशेष–यहाँ दिव्य ज्ञान से युक्त सभी प्राणियों के मन सद्विचारों से सम्पन्न होने की कामना व्यक्त की गई है।

पठितावबोधनम्–

प्रश्नाः– (क) एकपदेन उत्तरत–

(i) जाग्रतः मनः कुत्र उदैति? (ii) सुप्तस्य किम् दूरमुदैति?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) दूरङ्गमं ज्योतिषाम् एकं ज्योतिः किम्?

(ii) मे मनः कीदृशम् भवतु?

(ग) भाषिककार्यम्–

(i) 'उदैति' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

(ii) 'यज्जाग्रतो' इत्यत्र 'यत्' सर्वनामपदस्य संज्ञापदं किम्?

(iii) 'सुप्तस्य' इति पदस्य पद्यांशे विलोमपदं किम्?

उत्तराणि– (क) (i) दूरम्। (ii) मनः।

(ख) (i) दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं मनः अस्ति।

(ii) मे मनः शिवसङ्कल्पम् भवतु।

(ग) (i) मनः (यत्)। (ii) मनः। (iii) जाग्रतः।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी–(i) **यज्जाग्रतः**–यत् + जाग्रतः (श्चुत्व सन्धि)। **सुप्तस्य**–सुप् + क्त (षष्ठी एकवचन)। **तथैवेति**–तथा + एव + एति (वृद्धि सन्धि)। **ज्योतिरेकम्**–ज्योतिः + एकम् (विसर्ग, सत्व)। **तन्मे**–तत् + मे।

(ii) अस्मिन् मन्त्रे **त्रिष्टुप्** छन्द वर्तते।

(5)

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतम्।
शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतम्
अदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥ 5॥

अन्वयः–देवहितं शुक्रं तत् चक्षुः पुरस्तात् उच्चरत्। शतम् शरदः पश्येम, शतम् शरदः जीवेम, शतम् शरदः शृणुयाम, शतम् शरदः प्रब्रवाम, शतम् शरदः अदीनाः स्याम, भूयः च शतात् शरदः॥ 5॥

कठिन-शब्दार्थ–देवहितम् = देवताओं द्वारा स्थापित। **शुक्रम्** = दिव्य, चमकीला, श्वेत। **चक्षुः** = नेत्र, सूर्य। **पुरस्तात्** = पूर्व दिशा में, समक्ष। **उच्चरत्** = उदय हुआ है। **शरदः** = वर्ष। **शतम्** = सौ। **जीवेम** = जीवित रहें। **शृणुयाम** = सुनें। **प्रब्रवाम** = बोलें। **अदीनाः** = दीनता से रहित। **स्याम** = होवें। **भूयश्च** = पुनः, बार-बार।

प्रसंग–'वेदामृतम्' शीर्षक पाठ से लिया गया यह मंत्र मूलतः यजुर्वेद के छत्तीसवें अध्याय का चौबीसवाँ मंत्र है। प्रस्तुत मंत्र में मन्त्रद्रष्टा ऋषि ने ईश्वर से दीनता से रहित होकर सौ वर्षों से अधिक जीवन धारण करने की प्रार्थना की है –

हिन्दी अनुवाद/भावार्थ–देवताओं द्वारा स्थापित, दिव्य या चमकीला नेत्र रूपी सूर्य पूर्व दिशा में उदय हुआ है। (हे सूर्य!) (हम आपकी कृपा से) सौ वर्ष देखें, सौ वर्ष जीवित रहें, सौ वर्ष सुनें, सौ वर्ष तक बोलें अर्थात् इतने समय तक बोलने की शक्ति ग्रहण करें। सौ वर्ष तक दीनता से रहित या स्वस्थ रहें। इतना ही नहीं, बार-बार सौ वर्षों से भी अधिक हमारी यही स्थिति बनी रहे।

विशेष–यहाँ ऋषि ने सूर्य देव से मानव-मात्र के स्वस्थ, सुखी एवं सौ वर्षों से भी अधिक जीवन के लिए प्रार्थना की है। इसमें सूर्य की उपासना वर्णित है।

पठितावबोधनम्–

प्रश्नाः– (क) एकपदेन उत्तरत–

(i) वयं कति वर्षाणि जीवेम? (ii) शुक्रं चक्षुः कैः स्थापितः?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) वयं कति वर्षाणि शृणुयाम? (ii) वयं शरदः शतं कीदृशाः स्याम?

(ग) भाषिककार्यम्–

(i) 'शरदः शतम्' इत्यत्र विशेषणपदं किम्?

(ii) 'दीनाः' इत्यस्य विलोमपदं किम्?

(iii) 'उच्चरत्' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

उत्तराणि– (क) (i) शतम्। (ii) देवैः।

(ख) (i) वयं शतं वर्षाणि शृणुयाम। (ii) वयं शरदः शतम् अदीनाः स्याम।

(ग) (i) शतम्। (ii) अदीनाः। (iii) चक्षुः।

व्याकरणात्मक-टिप्पणी–उच्चरत्–उद् + चरत् (श्चुत्व)। **भूयश्च**–भूयः + च (विसर्ग सत्व व श्चुत्व)। **अदीनाः**–न दीनाः (नञ् तत्पुरुष) **पुरस्ताच्छुक्रम्**–पुरस्तात् + शुक्रम् (छत्व, हल्)। **तच्चक्षुर्देव**–तत् + चक्षुः + देव (श्चुत्व तथा विसर्ग, रुत्व सन्धि)।